सामाजिक संस्था सम्पूर्णा
समग्र विकास की ओर अग्रसर
गैर सरकारी संगठन

आलेख

मनमीत का जाना

आज मीरा बहुत ही उदास है। सच कहूं तो ये उदासी भी नहीं है। एक विरक्ति का सा भाव मीरा के मन में बार-बार घुमड़ रहा है। बचपन से लेकर बुढ़ापे तक के सफर में अगर कोई बहुत ही अपना प्यारा होता है तो वह बचपन और युवा अवस्था के साथी ही होते हैं। यह समय बहुत ही चंचल होता है। मीरा के साथ भी ऐसा ही हुआ। मीरा को भी बहुत से साथी मिले और बहुत से साथी मिल रहे हैं। यह सफर इस प्रकार से चलता है। परंतु अपने युवा अवस्था के मित्र का खोना असहज होता है।

आज की सुबह कुछ ऐसी ही थी। मीरा अपने रोजमर्रा के कामों में व्यस्त थी। एक कमरे के बाद दूसरे कमरे को साफ कर सभी सामान को सजा रही थी। तभी अचानक फोन की घंटी बजी। उसने फोन उठाया। फोन पर संदेष मिला कि हमारा एक युवा अवस्था का साथी नहीं रहा। बहुत से साथी ऐसे ही कालजयी हो गये। जो बचपन से वृद्धावस्था तक साथ निभाते हैं। साथ ही साथ कई बार उन पर अपना अतिक्रमण भी होता है। मीरा को रह-रहकर पहली स्मृति से लेकर अंतर के संवाद अंखों के सामने आ रहे हैं। बार-बार यह भी सुनते आते हैं कि हमारा शरीर नष्वर है। एक दिन सबको इस संसार से चले जाना है। केवल आत्मा ही अजर-अमर है। कहते हैं कि किसी के बिछुड़ने तथा चले जाने का संताप नहीं करना चाहिए। यह भी स्मरण आता है कि जब भगवान श्री राम ने मानव अवतार लिया वह भी मित्रसम भ्राता भरत ने संताप में दिन-रात चिंतित रहते थे। कहा जाता है कि एक बार वनवास के समय सुर्योदय से पूर्व जब श्री राम नदी में स्नान करने के बाद तट पर लौटे वह काफी चिंतित दिखाई पड़े। इधर लक्षमण जी ने भ्राता श्री राम की चिंता को देख उनसे पूछा कि भगवन आप किस विषय में सोच रहे हैं। तब श्री राम ने बताया कि लखन इस सर्दी के मौसम में मेरा भाई भरत भी इसी प्रकार सरयू नदी में स्नान कर रहा होगा। सर्दी के मौसम में उत्तर-भारत में बहुत ठंड होती है। यह सोचकर मैं दुःखी हो रहा हूं। सच में कुछ भाव इसी प्रकार के होते हैं। मित्रता का भाव सबसे सर्वोत्तम है। इसीलिए पूरा संसार श्री कृष्ण और सुदामा के प्रेम को मित्रता का सर्वोत्तम उदाहरण मानती है।

ऐसे ही अनेको भाव मीरा के मन में उठ रहे थे। मीरा सोच रही थी कि पिछली शताब्दि में जब बच्चे और युवा मित्रां के अभाव में लैपटॉप को ही अपना मित्र बना लेते हैं उनके लिए यह भाव न जाने कितने आत्मसात होंगे। लेकिन मैं यह दावे से कह सकती हूं कि छोटी-छोटी नादानियों और शरारतें और मित्रता के भाव के बिना यह जीवन सच में शून्य है। मीरा व्यक्ति के विकास के सम्पूर्णता में सभी कलाओं और भावनाओं को आवष्यक समझती है। और वह मित्रों का महत्व हर पल देती है। यह आलेख उन सभी देष के धरोहर वाले मित्रों को समर्पित है जिनके पास बाल और युवाकाल के मित्र चारों और हैं।